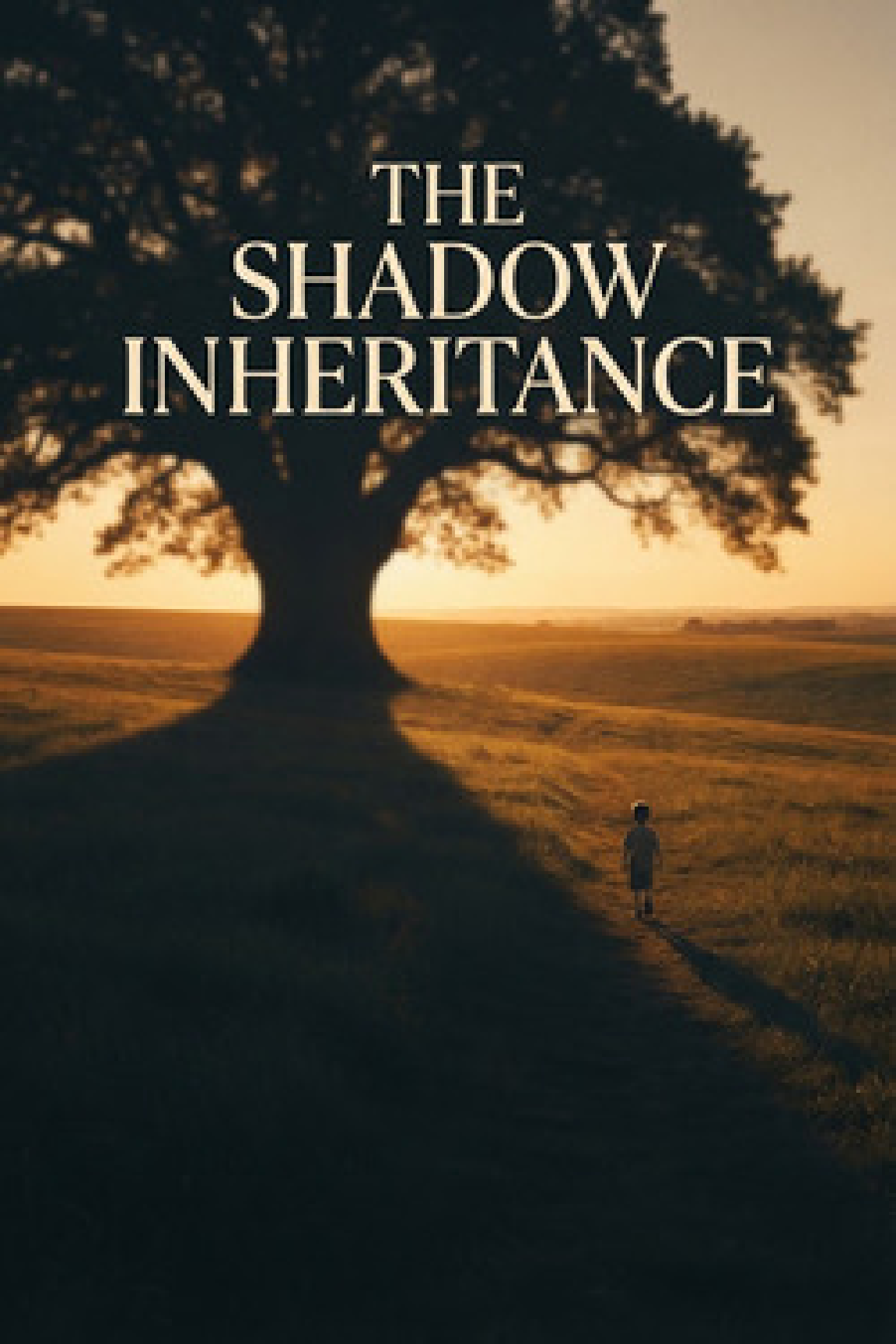

THE
SHADOW
INHERITANCE

दहलीज़ 2
छाया की विरासत

अगर तुम किसी जीवन को दूर से देखो, तो सब कुछ अर्थपूर्ण लगता है।

बिंदु जुड़ जाते हैं।

घटनाओं को एक व्याख्या मिल जाती है।

मोड़ अनिवार्य दिखने लगते हैं।

यहाँ तक कि ग़लतियाँ भी किसी योजना का हिस्सा लगती हैं।

पर यह एक भ्रम है जो वर्तमान का है।

जब तुम चीज़ों को जीते हो, तो कोई नक़्शा नहीं होता।

सिर्फ़ दिन होते हैं।

और दिनों में कोई व्याख्या नहीं होती।

फ़ैसले होते हैं।

जब मैं जवान था तब सोचता था कि बड़े लोग जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं।

मैं सोचता था कि शिक्षक विद्यार्थियों का भविष्य जानते हैं।

मैं सोचता था कि कंपनियाँ लोगों की क्षमता को पहचानना जानती हैं।

मैं सोचता था कि दुनिया में एक व्यवस्था है।

फिर मैंने एक कहीं अधिक सरल सच्चाई खोजी।

कोई सचमुच नहीं जानता कि क्या होगा।

सब लोग टटोलते हुए चलते हैं।

कुछ इसे स्वीकार कर लेते हैं।

बाक़ी ऐसा न होने का दिखावा करते हैं।

अपने जीवन को देखते हुए, मैं ऐसा कोई क्षण नहीं ढूँढ़ पाता जिसमें किसी ने कहा हो:

“यह व्यक्ति दूर तक जाएगा।”

कोई मेरा इंतज़ार नहीं कर रहा था।

कोई तरजीही रास्ता नहीं था।

पहले से तैयार कोई योजना नहीं थी।

मैं किसी का चहेता नहीं था।

और, सच कहूँ तो, इस खोज ने मुझे आज़ाद कर दिया।

क्योंकि जब कोई तुम्हारा इंतज़ार नहीं करता, तो तुम दूसरों की अपेक्षाओं को पुष्ट करने के लिए जीना छोड़ देते हो।

तुम अपना रास्ता बनाना शुरू करते हो।

एक-एक क़दम।

बहुत से लोग अपना जीवन उस छवि के अनुरूप बनने की कोशिश में बिता देते हैं जो दूसरों ने उनके लिए गढ़ी है।

मेरे पास एक अलग तरह की बढ़त थी।

वह छवि थी ही नहीं।

इसीलिए मैंने जल्दी ही अनिश्चितता के साथ जीना सीख लिया।

चीज़ें बदलने पर न घबराना।

बदलाव को ख़तरा न मानना।

अपरंपरागत रास्तों को ग़लती न समझना।

जीवन ने कभी मेरी योजनाओं के मुताबिक़ चलने की परवाह नहीं की।

और, समय के साथ, मैंने सीख लिया कि उससे ऐसी माँग न करूँ।

ऐसे क्षण आए जब सब कुछ सही दिशा में जाता लगता था।

और ऐसे क्षण जब ठीक इसका उलटा होता लगता था।

वे लोग जो अपरिहार्य लगते थे और जो ग़ायब हो जाते थे।

वे अवसर जो निर्णायक लगते थे और जो महत्वहीन निकलते थे।

वे राहें जो गौण लगती थीं और जो केंद्रीय बन जाती थीं।

आकस्मिक मुलाक़ातें जो आने वाले सालों की दिशा बदल देती थीं।

सच यह है कि भविष्य को चौंकाना पसंद है।

वह इजाज़त नहीं माँगता।

वह पहले से कोई सूचना नहीं भेजता।

वह पदानुक्रमों का आदर नहीं करता।

वह बस आ जाता है।

और अक्सर वह वहाँ से आता है जहाँ कोई नहीं देखता।

मेरे अस्तित्व को परिभाषित करने वाली बहुत सी चीज़ें ऐसे ही जन्मीं।

भटकावों से।

हादसों से।

उन घटनाओं से जिनमें, जिस क्षण वे घट रही थीं, महानता का कोई आभास नहीं था।

मुझे एक सबक़ याद है जो समय ने मुझे कुछ कठोरता से सिखाया।

पूर्वानुमेयता को मूल्य समझने की भूल नहीं करनी चाहिए।

जो पूर्वानुमेय है वह आश्वस्त करता है।

जिसमें मूल्य है वह रूपांतरित करता है।

ये दोनों चीज़ें शायद ही कभी मेल खाती हैं।

सालों तक मैंने बाज़ारों, कंपनियों, आँकड़ों, संगठनों को देखते हुए काम किया।

हर जगह मुझे वही धारणा मिलती।

कि हर चीज़ का पूर्वानुमान लगाना संभव है।

कि वास्तविकता को साधा जा सकता है।

कि भविष्य एक खींची जा सकने वाली रेखा है।

फिर हमेशा कुछ न कुछ आ जाता जो उस निश्चितता को झुठला देता।

एक बदलाव।

एक संकट।

एक व्यक्ति।

एक बीमारी।

एक क्षति।

एक अवसर।

कुछ ऐसा जिसे किसी ने योजना में नहीं रखा था।

फिर भी ठीक वहीं कहानी का सबसे दिलचस्प हिस्सा शुरू होता था।

क्योंकि जीवन पूर्वानुमान लगाने की क्षमता को नहीं नापता।

वह ढल जाने की क्षमता को नापता है।

यह अंतर बुनियादी है।

पूर्वानुमान लगाना बुद्धि का अभ्यास है।

ढल जाना पहचान का अभ्यास है।

जब दुनिया बदलती है, तो वह नहीं जीतता जो सही था।

वह जीतता है जो बदलाव के भीतर ज़िंदा रह पाता है।

कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि क्या होता अगर किसी ने मुझे ठीक-ठीक बता दिया होता कि मेरा रास्ता कैसे तय होगा।

शायद मुझे कम डर लगता।

शायद मैं कम ग़लतियाँ करता।

शायद मैं कम दुख उठाता।

पर फिर मैं समझता हूँ कि मैं कहीं कम सीख पाता।

क्योंकि जिन चीज़ों को मैं महत्वपूर्ण मानता हूँ उनमें से अधिकांश निश्चितता से नहीं जन्मीं।

वे संदेह से जन्मीं।

जोखिम से।

गारंटियों के अभाव से।

यह न जानते हुए आगे बढ़ने की ज़रूरत से कि मैं ठीक-ठीक कहाँ जा रहा हूँ।

इस मायने में, अपेक्षित न होना एक विशेषाधिकार था।

इसने मुझे रचने पर मजबूर किया।

देखने पर।

सीखने पर।

बदलने पर।

फिर से शुरू करने पर।

हर बार।

बार-बार।

आज बहुत से लोग स्वीकृतियों के पीछे भागते हैं।

वे अनुमतियों का इंतज़ार करते हैं।

वे पुष्टियाँ खोजते हैं।

वे पहले से जानना चाहते हैं कि क्या उन्हें स्वीकारा जाएगा।

क्या उन्हें पहचाना जाएगा।

क्या उन्हें समझा जाएगा।

मैं कोई नुस्खा नहीं दे सकता।

मैं सिर्फ़ वह सुना सकता हूँ जो मैंने सीखा।

अधिकांश मामलों में, दुनिया को पता ही नहीं होता कि तुम हो।

वह तुम्हारा इंतज़ार नहीं करती।

वह तुम्हारे लिए रास्ता तैयार नहीं करती।

वह स्वागत का कोई समारोह आयोजित नहीं करती।

और शायद यही ठीक है।

क्योंकि किसी रास्ते का मूल्य इस पर निर्भर नहीं करता कि किसने उसका पूर्वानुमान लगाया था।

वह इस पर निर्भर करता है कि किसमें उसे पार करने का साहस था।

मैं अपेक्षित नहीं था।

मैं प्रतीक्षित नहीं था।

मैं नियोजित नहीं था।

फिर भी मैं यहाँ हूँ।

पीछे मुड़कर देखते हुए।

बिंदुओं को जोड़ते हुए।

समय की विडंबना पर मुस्कुराते हुए।

क्योंकि, आख़िरकार, सबसे दिलचस्प कहानियाँ वे नहीं होतीं जो पहले से लिखी जाती हैं।

वे होती हैं जो अपने आप ही अस्तित्व में आने का रास्ता खोज लेती हैं।

और मेरी, अच्छा हो या बुरा, इसी श्रेणी की है।